शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

मेवाड़ चित्रण परम्परा में नारी सौन्दर्य

कु0 रीना
शोधार्थिनी
ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
ईमेलः renubrt86@gmail.com

सारांश

राजस्थानी चित्रकला गुर्जर, पाल, जैन, अजन्ता, एलोरा आदि के चित्रों से प्रभावित होकर ही पल्लवित व पोषित हुई है। इनका प्रभाव चित्रों में अंकित रंग–रूप, रेखा, वेशभूषा, आभूषण व भावों आदि पर रहा है तथा आज यहाँ के चित्रों में प्राचीन एवं नवीन परम्पराओं का प्रभाव चित्रों में प्रदर्शित है। मेवाड़ के विभिन्न सम्राटों ने अपने–अपने राज्यकाल में अपनी रूचि के अनुरूप लघु चित्र, भित्ति चित्र, ग्रन्थ चित्र विभिन्न पद्धतियों में चटक रंगों द्वारा चित्रित करवाये हैं। तथा ये चित्राकृत्तियाँ देवालय, महल, भवन, हवेली, किले, दुर्ग आदि की दीवारों पर चित्रांकित की गयी है।

यहाँ पर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, शिकार, उत्सव आदि अन्य पर आधारित विशयों का अंकन बहुत ही विशिष्ट ढ़ंग से हुआ है। जिसमें परम्पराओं पर आधारित नारी–सौन्दर्य का चित्रण उल्लेखनीय रहा है। यहाँ पर चित्र निर्मित करने में प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित चित्रकर्म के सिद्धान्त का भी पालन किया गया है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में मेवाड़ शैली में चित्रित नारी आकृति की वेशभूषा, आभूषण व शारीरिक गठन का विस्तृत वर्णन दिया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में राजस्थानी कला एक महत्वपूर्ण शैली के रूप में रही है। जिसके गहन अध्ययन में रूचि उत्पन्न होना एक कलाप्रेमी के लिए स्वाभाविक है। राजस्थानी चित्रकला का मूल भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता है। भारतवर्श में राजपूत राजाओं के निवास करने के कारण ही यह प्रदेश राजस्थान कहलाया। राजस्थानी चित्रकला को प्रमुख चार केन्द्रों में विभक्त किया गया है मेवाड़, मारावाड़, हाड़ौती, ढूँढार आदि रहे हैं

राजस्थानी चित्रकला का आरम्भिक ''दर्शन स्त्रोत मेवाड़ है। मेवाड़ राजस्थान के दक्षिण भाग में 30^0 49′ 20^0 28 उत्तरी अक्षांश एवं 73^0 1′ व 75^0 49′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। 45 मेव जाति के चिरकाल तक''[1] इस स्थल पर निवास करने से इसे 'मेदपाट' एवं 'मेवाड़' कहा गया है। यह अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है तथा राजस्थान में इसका विलय सन्

1948 ई0 में हुआ जो आज उदयपुर भीलवाड़ा एवं चित्तौड़ जनपदों में विभक्त है। मेवाड़ राज्य की स्थापना 628 में बापारावल ने की थी। इनके वंशज महाराणा कहलाये। मेवाड़ अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए भी विख्यात है। यहाँ का इतिहास शौर्य स्वतन्त्रता व संस्कृति के रक्षक के लिए प्रसिद्ध रहा है। उदयपुर मेवाड़ का मुख्य केन्द्र रहा है। मेवाड़ के अन्तर्गत चावण्ड़, उदयपुर, देवगढ़, नाथद्वारा आदि क्षेत्र आते हैं। 'चित्तौड़गढ़', 'मॉडलगढ़', 'कुम्भलगढ़' मेवाड़ के प्रसिद्ध किले हैं कुम्भलगढ़ व चित्तौड़गढ़ किलो के स्मारक आज भी संस्कृति के जीवन्त उदाहरण है। महाराणा उदयसिंह ने चित्तौड़ के ध्वस्त होने पर उदयपुर को नई राजधानी बनाया था। यहाँ पर मीराबाई ने कृष्ण भक्ति की ऐसी प्रेम धारा प्रवाहित की जिसका सम्पूर्ण राजस्थानी संस्कृति एवं कला में अद्वितीय प्रभाव आया।

यहाँ के राजा–महाराजाओं में राजा रतन सिंह, करन सिंह, मोखल सिंह, लाखा सिंह, संग्राम सिंह, रतन सिंह, उदय सिंह, जगत सिंह, जय सिंह, राज सिंह, प्रताप सिंह, अभय सिंह, भीम सिंह, भूपाल सिंह एवं फतेह सिंह आदि रहे हैं।

मेवाड़ शैली में अनेक सम्राटों ने अपने–अपने शासनकाल में अपनी रूचि व क्षेत्रानुरूप सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, उत्सव, शिकार, प्रकृति दृश्य आदि अन्य आधारित विशयों को लेकर उत्कृष्ट सचित्र ग्रन्थ लघु चित्र एवं भित्ति चित्र बनवाये। ये चित्राकृतियाँ मन्दिर, महल, भवन, हवेली, किला आदि पर चित्रांकित करवायी गयी है। यहाँ का चित्रण कार्य दर्शनीय रहा है। मेवाड़ चित्रशैली के विषयों में 'पौराणिक आख्यान', 'रसिक प्रिया', 'पंचतंत्र', 'रागमाला', 'बिहारी सतसई', 'उत्सव', 'विलासिता', 'गीत–गोविन्द', 'मधुमालती', 'पृथ्वीराजसो', 'प्रियतमविलास', 'आखेट', 'शिकार', 'व्यक्ति चित्र' आदि अन्य पर चित्रांकन किया गया है। महाराणा कुम्भा ने अपने समय में 'जगनिवास महल', 'बैराठ की हवेली', 'दौलत रामजी–तिवाड़ी की हवेली', 'बापनी की हवेली', 'भट्ट का रंग', 'भवन' आदि की भित्तियों पर उत्कृष्ट चित्रांकन करवाया है। यहाँ के चित्रों में '' 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण', 'समरांगण सूत्रधार' एवं 'चित्रलक्षण' जैसे अन्य ग्रन्थों में वर्णित चित्रकर्म के सिद्धान्त का भी विकास के इस सतत प्रवाह में पालन किया गया है।''[2] तथा शास्त्रीय विवेचन में आये– यथार्थवाद व आदर्शवाद का निर्वाह परम्परागत कला सिद्धान्तों के अनुरूप ही हुआ है। 8वीं शताब्दी में आरम्भिक स्वरूपों का वर्णन 'हरिभद्रसुरि' द्वारा दो चित्र 'कुवलयमाला कहा', 'समराइच्चि कहा' जैसे प्राकृत ग्रन्थों से उपलब्ध कला सन्दर्भों में देखने को मिलता है।

मेवाड़ कलम की चित्रकला की प्राचीनकाल से ही लोगों का ध्यान आकर्षित करती रही है। यहाँ पर चित्रण की अपनी विशेष पम्परा है। जिसको मेवाड़ के कलाकार पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाते रहे हैं। और अपनी सुविधाओं एवं अनुभवों के अनुरूप ही चित्रांकन के नये तरीके खोजते रहे जो आज यहाँ के कई स्थलीय चित्रण केन्द्रों में परम्परागत पद्धति दृष्टव्य है। पद्धतियों का प्रादुर्भाव पश्चिमी भारतीय चित्रांकन तकनीक के अनुरूप ही ताड़पत्र के चित्रांकन कार्यों में देखने को मिलता है। षड़ग के सन्दर्भ 'कुवलयमाला कहा' एवं 'समराइच्च कहा' जैसे ग्रथों में 'दटठुम' शब्द का प्रयोग कृति के मूल्यांकन हेतु किया गया, जिससे मेवाड़ की विशिष्ट परम्परा के प्रमाण देखे जा सकते हैं। ये चित्राकृति समीक्षा की कसौटी के रूप में मुल्यांकन एवं मानक के आधार

रहे हैं। यहाँ पर कलाकारों प्राकृतिक व चटक रंगों का प्रयोग सर्वाधिक किया है। इसके अलावा सोना, चाँदी, रांगा, जस्ता तथा भूमि से प्राप्त वर्णों का प्रयोग भी किया है। रंग रेखा, रूप एवं संयोजन का व्यापक प्रयोग यहाँ पर उत्कृष्ट ढंग से किया गया है। आत्मिक सात्विकता के अनुरूप चित्र संयोजन रीतिकालीन राग–रागिनियों एवं श्रृंगारिक का चित्रांकन किया गया है। इस कलम की कृत्तियों में मनोवैज्ञानिक संयोजन पद्धति की विशेषता है।

मेवाड़ कलम में आरिम्भक गुर्जर प्रभाव के दौर से ही कलाकृतियों में आँख, ठोड़ी, नाक एवं वेशभूषा का अंकन गुर्जर एवं अपभंश कलाकृत्तियों में पोषित हुआ है फलफूल, पेड़–पत्तियाँ, पशु–पक्षी (हंस, चकोर, हिरन, शेर, हाथी, घोड़ा, मोर) आदि का कलापूर्ण, सरलीकरण, ''नारी चित्रों के पहनावे में सादगी एवं अन्य सरलीकृत आकृत्तियाँ तत्कालीन चित्रण परम्परा में आधुनिक रूपों एवं विवरण को व्यक्त करती है।''[3] मेवाड़ शैली में चित्रित कलाकृत्तियों की परम्परा में नारी आकृत्तियों का सौन्दर्यात्मक वर्णन विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया है जो कि उल्लेखनीय रहा है।

मेवाड़ के लघु चित्रों में परम्परागत नारी–सौन्दर्य के चित्रण में नायिका राधा आदर्श नारी की आकृत्तियों के रूप में चित्रित की गयी है। आकृत्तियों, भाव–भंगिमाओं एवं विभिन्न मुद्राओं का चित्रांकन भी कलाकार ने बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। यहाँ की नारी आकृत्तियाँ अन्य शैलियों से विशेष रूप से अलग दिखाई पड़ती है। चित्तौड़गढ़ के 'समद्धिश्वर महादेव देवालय' (मन्दिर) के खम्बों पर शिलालेख युक्त 1229 ई0 के उत्कीर्ण रेखांकन से मेवाड़ कलम की चित्रकला का प्रमाणिक क्रम शुरू होता है। ये चित्राकृत्ति तत्कालीन सूत्रधार शिल्पों में है। उस दौर के मुख्य सूत्रधार 'जैयतूक' का खम्बे पर शिलालेख की कतारों के नीचे मानवाकृति हाथ जोड़े खड़ी चित्रित है। ''इन आकृत्तियों में चेहरे पर सवाचश्म आँखें बाहर की ओर निकली हुई है। तथा केश बँधे हुए अंकित हैं। नुकीली नाक, तत्कालीन पहनावे में लहराते वस्त्र मेवाड़ की प्राचीन परम्परा के द्योतक है। साथ ही चित्र में एलोरा व अजन्ता की चित्रण तकनीक एवं पश्चिम भारत शैली के मिश्रित रूप का संयोजन दृष्टव्य है।''[4]

मेवाड़ कलम की प्रारम्भिक लघु चित्राकृत्तियों में ''श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचुण्री'' नामक चित्र ग्रन्थ प्राप्त हुआ है। इसकी रचना 1260 ई0 में की गयी थी ओर चित्रांकन गुहिल्ल वंशीय''[5] सम्राट तेजसिंह के शासनकाल में हुआ। इस कलम का दूसरा उत्कृष्ट ग्रन्थ ''सुपासनाहचर्यम' (पाश्रर्वनाथ चरित्र) चित्रित ग्रन्थ सन 1423 ई0 की चित्राकृति है। इसमें नारी आकृत्तियों के मुखमण्डल सवाचृम बनाये गये हैं। मुख की लम्बाई, चौड़ाई, समान है। बालों के जूड़े बने हैं। भौहें आपस में मिली हुई, नुकीले नेत्र, परवलनुमा आँखों की कटाक्ष रेखा दूर तक चित्रित है। और दूसरे गाल के बाहर तक निकली हुई चित्रांकित है। छोटे व पतले अधर, आम की गुठली के समान चिबुक निर्मित है। बालों की एक गोल लटकान के निकट चित्रित की गयी है। कान लम्बे व छिदे हुए हैं। बाँहे पुष्ट व छोटी बनी हैं। कठोर व छोटी अंगुलियाँ अंकित की गयी हैं। नारी आकृत्तियों में उरेज भारी एवं आगे की तरफ बढ़े हुए, पेट का हिस्सा पतला है। कटि कम पुष्ट गोलाकार है। पैर थोड़े लम्बे बनाये गये हैं।

वेशभूषा

नारी की वेशभूषा में ब्लाउज व सीधे पल्लू की साड़ी अंकित है। तथा बेल व छोटी बूटियों के डिजाईन अलंकरण साड़ी के ऊपर चित्रांकित है। इन नारी आकृत्तियों की वेशभूषा में चितेरे ने साड़ी के डिजाईनों में अन्तर प्रस्तुत किया है।

आभूषण

नारी आकृत्ति के आभूषणों में एक नारी मुकुट पहने चित्रित है। व अन्य आभूषण दोनों नारी आकृत्तियों को एक समान ही पहनाये गये हैं। कानों में बड़े कुण्डल, गले में डिजाईनयुक्त हार, नाक में मोती अंकित हैं। कटि पर तगंडी, कलाईयों में काँच की चूड़ियाँ व पैरों में पायल चित्रित है। नारी के कन्धें, भुजाएँ एवं मुखमण्डल के चित्रण अधिक सौन्दर्यात्मक दिखाई पड़ते हैं अधिकांशतः नारी का काय प्रमाण के अनुरूप सवा चार ताल में ठिगने शरीर में और कठपुतली जैसी मुद्रा में चित्रांकित किया है। यह चित्राकृति अलंकार प्रधान होते हुए भी अपभ्रंश कलम से प्रभावित है।

मेवाड़ शैली में 1580 ई0 की चित्रित 'चौर पंचाशिका' में 'विल्हण चम्पावती' नामक कृत्ति है। जो अहमदाबाद के संस्कार केन्द्र में है। इस चित्राकृत्ति में नारी का मुखमण्डल एकचश्म अंकित है। उठा हुआ माथा, कमल की पंखूड़ी जैसेः– बड़े नेत्र, लम्बी व नुकीली नाक, लम्बे बाल, पतले अधर चित्रित है। आम की गुठलीनुमा चिबुक, कान नासिका की लम्बाई के समान चित्रित है। बालों की एक गोल लट कान के निकट, आँख को छूती हुई निर्मित है। कन्धे व भुजाएँ पतले व लम्बे बनाये गये हैं। हाथों की अंगुलियाँ कुछ पतली व लम्बी है। नारी का पेट व उरोज का हिस्सा बहुत पतला है। एकदम क्षीण कीट एवं समानता पुष्ट गोलाईनुमा नितम्बों का चित्रण है। पैर व अंगुलियाँ थोड़ी छोटी है।

वेशभूषा

नारी आकृति की वेशभूषा में लहँगा, ऊँची चोली अंकित है। अलंकरण युक्त पारदर्शी चुनरी ओढ़े चित्रित किया गया है।

आभूषण

नारी आकृति को आभूषणों से युक्त बनाया गया है। माथे पर जड़ित टीका, नाक में मोती है। गले में डिजाईनयुक्त हार तथा कानों में बड़े कुण्डल अंकित है। गले, बाजू, कलाई एवं वेणी में काले रंग के गोल फून्दनों का चित्रांकन मेवाड़ कलम की नारी आकृति की विशेषता के रूप में हुआ है।

मेवाड़ चित्रशैली में 'महाराणा अरिसिंह एवं प्रेयसी' नामक चित्राकृति सन 1763 ई0 में शिवा कलाकार द्वारा अंकित की गयी है। जो उदयपुर के पुरुषोत्तम कन्हैयालाल सोनी संग्रहालय में सुरक्षित है।

इस चित्राकृत्ति में नारी आकृति का मुखमण्डल गोल व एकचृम रूप में अंकित किया गया है। माथा ऊँचा व गोल, पतली व पीछे से उठी हुई भौहें बनायी गयी हैं। नुकीली व लम्बी नाक, बादामनुमा अर्द्ध खुले नेत्र चित्रित है तथा पुतली अर्द्धचन्द्र बिन्दु के बराबर न होकर एक तरफ बनी

है। अधर थोड़े मोटे व मिले हुए अंकित है। कान नाक की लम्बाई के समान है। गोल व भारी चिबुक, केशों की लट कान के निकट से आँख तक लहराती बनायी गयी है। पुष्ट कन्धें, भुजाएँ लम्बी व पुष्ट बनी हैं। भरा हुआ मुखमण्डल ग्रीवा छोटी एवं स्थूल बनायी गयी है। हाथ तथा अंगुलियाँ पतली एवं लम्बी चित्रांकित की गयी। कलाई पतली है। पैरों में समतल ऐड़ी युक्त जूतियाँ चित्रित है। सम्पूर्ण गोलाईयुक्त उरोज, मोटी कमर पुष्ट गोलाकार नितम्बों का चित्रांकन किया गया है।

वेशभूषा

नारी आकृति की वेशभूषा में बड़े गले व छोटी बाँह से युक्त ऊँची चोली, और नीचे पैरों तक लम्बा घेरनुमा लहँगा अंकित किया गया है। लहँगे के सामने की तरफ सामान्य पटका निर्मित है। सादी व पारदर्शी चुनरी बनायी गयी है।

आभूषण

नारी के कानों में कर्णफूल, भुजाओं में बाजूबन्द एवं गले व कलाईयों में मालाओं में बन्धे काले वर्ण के गोल फूंदनो का चित्रण हुआ है। गले में मंगलसूत्र के रूप में काले वर्ण के धागे को अंकित किया गया तथा इन्हीं में एक मोतियों की लम्बी माला भी है। नाक में मोती चित्रित है।

मेवाड़ कलम में सन् 1552–1592 ई0 में 'गीत–गोविन्द', 'भागवत पुराण', 'चोर पंचाशिका', ढोलामारू आदि कलाकृत्तियों का चित्रांकन किया गया है। 'भागवतपुराण' और 'चोर पंचाशिका' की चित्राकृत्तियों में एक विशेष प्रकार की शैली का विकास हुआ है जो पश्चिमी भारतीय कलम के सभी आशयों को निर्मित किया गया जैसे स्त्री आकृतिके चेहरे के भाव आकर्षक युक्त प्रदर्शित होते हैं। जिसमें नयन लम्बे, नाक गोल व मुख मण्डल कुछ समय उपरान्त मेवाड़ कलम की कलाकृत्तियों की विशेषताओं के साथ जुड़ गये तथा अपने आरम्भिक समय में मेवाड़ चित्रकला पूर्णरूप से स्वतन्त्र एवं अन्य शैलियों के अनुकरण एवं प्रभाव से मुक्त दिखाई पड़ती है।

'भागवतपुराण' की चित्राकृति में 'बालक कृष्ण के स्नान' की कृति सन् 1500 ई0 में निर्मित है। जिससे यह ज्ञात होता है कि मेवाड़–शैली प्रारम्भिक दौर में अन्य प्रभावों से मुक्त थी। इस कलाकृति में बाहर की तरफ निकली आँखें हट गयी थी। आँखें उत्कृष्टतापूर्ण मोटी विपरीत कमानीयुक्त रेखाओं के बीच एक बिन्दु अंकित कर सौन्दर्य को प्रदर्शित कर रहे हैं। ''ठोड़ी के नीचे की ओर गोलाई इस समय में देखने को मिलती है। धोती व साड़ी के पल्लू इस शैली की विशेषता के अनुरूप ही आगे की ओर झूलते प्रदर्शित है।''[6] गतिपूर्ण रेखाएँ एवं सामान्य अलंकरण भारतीय परम्परा को प्रस्तुत करता है।

इस शैली में सन् 1592 ई0 में घुड़सवारो के काफिले व 'ढोलामारू री चौपाई' कला–कृत्तियाँ आहड़ में चित्रांकित की गयी है। जो नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में है। इस चित्राकृत्ति में नारी आकृत्तियों का मुखमण्डल– एकचश्म व गोल बना है। जिनकी लम्बाई अनुपात में चौड़ाई अधिक लम्बी चोटियाँ है। जो नितम्बों तक लटकी है। भौंहे छोटी व मोटी है जो पीछे से उठी अंकित है। मीनाकृत आँखें छोटी बिन्दी के जैसी पुतली जो आगे वाले भाग में है। नुकीली

व छोटी नाक, नाक व अधर के बीच की दूरी थोड़ी कम है। पतले व छोटे अधर जो बन्द अवस्था में चित्रित है। कुछ भारी व गोलाकार चिबुक, कान नाक की लम्बाई के समान है और छिदे हैं। उभरे गालों का चित्रण विचित्र रूप से नारी आकृतियों में किया गया है। हाथ छोटे व कलाई पतली, कन्धे थोड़े चोड़े, पुष्ट व छोटी बाजू, ग्रीवा छोटी बनायी गयी है। हाथों की अंगुलियाँ छोटी व पतली है जो हथेली की लम्बाई के समान है। पेट का हिस्सा थोड़ा मोटा व कम पुष्ट अंकित है। पैर एवं अगुलियाँ छोटे माप की बनी है। नारी शरीर प्रमाण के अनुरूप पाँच ताल में कुछ बड़े कद में चित्रांकित किया गया है।

वेशभूषा

नारी के सामान्य घेरदार व तिरछे डिजाईयुक्त लहँगा, कान को ढ़कती हुई व आँख को छूती हुई गोटेदार पारदर्शी चुनरी का अंकन है। तथा अक्षर V के आकार का गला व छोटे बाजू की ऊँची चोली पहने चित्रित है।

आभूषण

इन नारी आकृत्तियों को आभूषणों से युक्त अंकित किया गया है। गले, कलाई और चोटी में काले वर्ण के फूंदनों का अंकन है। कान में कर्णफूल, गले में दो–तीन धागे और एक लम्बी माला, कलाईयों में कोहनी तक काँच की चूड़ियाँ तथा पैरों में पायल का चित्रण हुआ है।

मेवाड़ कलम में महाराणा जगत सिंह के राज्यकाल में सन् 1628 ई0 में साहबदीन चित्रकार द्वारा उदयपुर में 'मारुराग–रागिनी' चित्राकृति बनायी गयी है। जो नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में है। इस कृति में नारी आकृत्तियों के एकचश्म एवं अण्डाकार चेहरे बनाये गये हैं बालों की लम्बी चोटी कमर तक लटकी हुई तथा पीछे की तरफ दबा हुआ भाल चित्रित है। बादामनुमा आँख, अर्द्धबिन्दु के समान पुतली अंकित की गयी। माथे पर केश आगे की तरफ चित्रांकित हुए है। मोटे व मिले हुए अधर बन्द अवस्था में चित्रित किये है। छिदे हुए छोटे कान, छोटी व मोटी ग्रीवा चित्रांकित है। हाथ व अगुलियाँ छोटी, पुष्ट कन्धे, भुजाएँ मोटी एवं छोटी निर्मित है। उरोज एवं मोटी कमर और स्वल्प पुष्ट नितम्बों का चित्रांकन इन नारी आकृति में किया गया है।

वेशभूषा

स्त्री की वेशभूषा में लहँगा, चोली, पारदर्शी चुनरी चित्रित है। चुनरी कान को आच्छन्दित करती हुई, आँख को छूती हुई चित्रांकित की गयी है। लहँगा व चोली भी सामान्य रूप में अंकित किये गये हैं।

आभूषण

नारी आकृति ने गले में काले वर्ण के धागे में मंगलसूत्र के रूप में बने है। कान में कर्णफूल, भुजाओं में बाजूबन्द व कलाईयों, गले में मालाओं में बन्धे काले वर्ण के गोल फूँदनों का चित्रण हुआ है।

राजस्थानी चित्रकला गुर्जर, पाल, अपभ्रंश, अजन्ता एवं एलोरा के चित्रों से प्रभावित होकर पल्लवित पोषित हुई इनका प्रभाव मेवाड़ के चित्रों में रंग, रूप, रेखा, वेशभूषा, आभूषण

भावों आदि पर रहा है। तथा आज यहाँ के चित्रों में प्राचीन व नवीन प्रभाव दिखाई पड़ते हैं। राजस्थानी कला को 'श्रृंगारिक चित्रकला' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यहाँ का नारी सौन्दर्य प्रसिद्ध रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. चौहान, सुरेन्द्र सिंह, *राजस्थानी चित्रकला,* राहुल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, 1994, पृं0–**53**
2. श्रीवास्तव, डॉ0 कमल स्वरूप, *प्राचीन भारत की सांस्कृतिक विरासत,* अभय–पब्लिकेशन शाहदरा, पृ0–**14**
3. उपरोक्त, पृ0–**15**
4. वशिष्ठ डॉ0 आर0 के0, *मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ0–**88**
5. नीरज, डॉ0 जय सिंह, *राजस्थान की चित्रांकन परम्परा,* जयपुर 2001, आठवाँ संस्करण, पृ0–**83**
6. वशिष्ठ, डॉ0 आर0के0, *मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ0–**20**
7. प्रताप, डॉ0 रीता, *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,* जयपुर, 2010
8. अग्रवाल, डॉ0 श्याम बिहारी, *भारतीय चित्रकला का इतिहास (मध्यकालीन),* इलाहाबाद
9. गुप्त, डॉ0 मोहनलाल, *राजस्थान के ऐतिहासिक दुर्ग,* 2017